संस्थापित १८९७

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ 3.00
वार्षिक शुल्क ₹ 150
(विदेश 100 डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ 2000

वर्ष : १२९ ● अंक-०३ ● आर्य मित्र १६ जनवरी, (मंगलवार) २०२४ पौष शुक्ल पक्ष पंचमी/षष्ठी संवत २०८० ● दयानन्दाब्द १९९ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२४

वेद का अनुसरण ही समाज सुधार का पथ

डॉ0 आर.आर. चतुर्वेदी
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0

इतिहास जानो। हमारे अनेक हिंदू मंदिर वेश कीमती दिव्य भव्य थे। उनके कृतित्व व्यक्तित्व को भूल तुम केवल पाखंड पूजा तक सीमित रहे। अपने पुरुषार्थ को दिया और मूर्तियों से मनोकामनाएं पूरी करने में पुरुषार्थ हीन हो गए। नतीजा विधर्मियों ने हमारे मंदिरों को तोड़ा लूटा तुम हिजड़ों जैसे ताली चटकाते रहे। कूटे गए। शस्त्र उठाकर लड़ते तो अस्मिता की रक्षा होती। भले शहीद हो जाते।

अब से चेतो। राम मंदिर सहित सभी युग पुरुषों के स्मारकों को प्रेरणा केंद्र और स्मृति स्थल मान उनकी तरह पुरुषार्थी भी बनो कि भविष्य में कोई वैदिक विधर्मी इन स्थलों की ओर आंख उठाने का साहस न करे, और यदि करे तो उसे मिटा दो जैसे राम कृष्ण ने धर्म की रक्षा के लिए तप साधना की। पुरुषार्थी बने। ये तुम्हारे जैसे शरीरधारी थे जिनका जीवन वेदमार्गी था। आप भी वैदिक संस्कार युक्त बने। इस पाखंड से आप मोक्ष क्या सुगती भी नहीं पाएंगे।

ईश्वर एक है जो सृष्टि की रचना कर जीवात्माओं को उनके कर्म फल के हिसाब से शरीर धारण कराता। ये युग पुरुष अपने पुण्य कर्मों से इतिहास में अमर हैं। उन्ही के वंशज हैं तो उनके जैसे क्यों नहीं बन सकते। ऐसी वैदिक यज्ञ, उपासना, योग तप से ही संभव है। गाल बजाने और पाखंड से कुछ नही संभव होगा। सभी आर्यजन वेद पथ के गामी बने।

वैदिक यथार्थ

डॉ0 बन्शीधर शुक्ला, हरदोई

प्राचीन वैदिक साहित्य में भारत देश जंबू द्वीप के आर्यावर्त प्रखंड के अभिन्न अंग के रूप में वर्णित है। यहां की संस्कृत वैदिक रही जिसके अनुसरणकर्ता आर्य थे। विदेशी आक्रांताओं ने देश पर लगातार हमले किए। अपने साम्राज्य स्थापित किए। इनकी संस्कृति आसुरीवृत्ति परक यानी वेद विरुद्ध थी। हमारे गुरुकुलों मंदिरों पुस्तकालयों को लुटा गया, तोड़ा गया, विनष्ट किया गया। विदेशी शासकों के अत्याचारों तथा आतंक से आर्य सभ्यता नष्ट हुई और आर्य विद्वान भी नहीं बचे। नतीजा हम आर्य से हिंदू हो गए और वेद ज्ञान रहित तथाकथित पंडितों जो वाममार्गी विचारधारा के प्रवाह में आए और कल्पित 18 पुराणों की रचना कर निराकार ईश्वर की जगह साकार उपासना अवतारवाद मूर्तिपूजा तंत्र, मंत्र, ढोंग, चमत्कार आदि को फैला कर अज्ञान वा भोली जनता को विगत 5000 वर्षों से ठगते चले आ रहे।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने वेदों के उद्धार का संकल्प लेकर आर्य समाजों की स्थापना की। वैदिक उपासना, यज्ञ, वैदिक 16 संस्कार, हो रक्षा, कृषि विज्ञान आदि पर व्याख्यान दिए। अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि, गौ करुणानिधि आदि दर्जनों वैदिक ग्रंथ लिखे। सामाजिक कुरीतियां अशिक्षा नारी उत्पीड़न संबंधी सुधार आंदोलन चलाए। ब्रिटिश शासन काल होते हुए भी आर्यसमाज एक क्रांतिकारी वैदिक धर्म का आंदोलन बना। यकीन न हो तो इतिहास पढ़ो की इससे निकले अनेक बिस्मिल, भगत, मंगल, लक्ष्मी बाई जैसे वीर वीरांगनाओं ने अपना बलिदान देकर देश को आजादी दिलाई।

आज हम उन देश भक्तों की जगह आजादी का श्रेय उन गद्दारों को दे रहे जो अंग्रेजी के पिट्ठू थे किंतु छद्मवेशी मक्कार राष्ट्र नायक बन बैठे। आज भारत के 70 साल तक सत्ता उनके हाथी में रहने का परिणाम हिंदुओं ने भोगा है जो आर्य थे और हिंदू बन गए। मुट्ठी भर आर्य समाजी और विशाल हिंदू खेमा आपस में ही लड़ रहा। वैदिक आस्थाएं मठों मंदिरों में सो रहीं और पौराणिक पोप लीला चरम पर है। यानी जो आचरण विधर्मिओं के मजहब पंथ में है उसी को हिंदुवर्ग शैव, शाक्त, वैष्णव, नागा, निहंग, अघोरी आदि संप्रदायों में समेटे है। बलि प्रथा मजार चादर मदार साई गंदा ताबीज जैसी हिंसक और घृणित विकृतियां हिंदू समाज ओढ़े है। यानी अहिंसा को हिंसा की भट्ठी में जुबान के स्वाद के लिए झोंक रहा। चेतन देव की जगह जड़देवी देवता बैठे हैं। निराकार सर्व व्यापक सर्व शक्तिमान ईश्वर को भूल भूत हो चुके शरीर धारियों के पुरुषार्थ को पाने के लिए तप साधना की जगह ढोंग ने लेली है। केवल आरती प्रसाद

शेष पृष्ठ 2 पर

अन्तरंगाधिवेशन सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठत, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक ३१ जनवरी, २०२४ बुधवार (माघ कृष्ण पंचमी) को प्रातः ११ बजे से डॉ० काशी प्रसाद वर्मा पैलेस, कबीरपुर, सुल्तानपुर रोड, गोसाईगंज, लखनऊ में संस्था प्रधान-डॉ० आर०आर० चतुर्वेदी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी। एजेण्डा एवं विस्तृत कार्यक्रमों की रूप-रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गयी है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

डॉ. आर.आर. चतुर्वेदी
प्रधान

डॉ0 जया तिवारी
मन्त्री

वेदामृतम

त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नर[११], वर्मेव स्यूतं परिपासि विश्वतः।[१२]
स्वादुक्षद्मा यो वसतौ स्योनकृज्, [११] जीवयाजं यजते सोपमा दिवः।।[१२] ऋग् १.३१.१५

जब हमें शत्रु के आयुधों से अपने शरीर की रक्षा करनी अभिप्रेत होती है, तब हम सिला हुआ अभेद्य कवच शरीर पर धारण कर लेते हैं। उस कवच से टकराकर वैरी के बाण, भाले आदि शस्त्रास्त्र कुठित हो जाते हैं। यहां वेद मनुष्य को एक अन्य कवच धारण करने की प्रेरणा कर रहा है, वह है दक्षिणा का कवच। हे अग्ने! हे तेज स्वरूप परमात्मन्! तुम दक्षिणा देने वाले नर की वैसे ही सब ओर से रक्षा करते हो जैसे कवच रक्षा करता है। पर कवच आदि ठीक प्रकार सिला हुआ तथा सुदृढ़ न हो, तो वह धारण कर्ता की रक्षा करने के स्थान पर स्वयं शत्रु के प्रहार से क्षत–विक्षत हो सकता है। इसी प्रकार दक्षिणा भी यदि पवित्र न हो तो वह दाता की रक्षा का साधन नहीं बनती। दक्षिणा में जो भोजन, वस्त्र, धन आदि दिया जा रहा है, वह शुभ साधनों से अर्जित हो तथा प्रसन्नतापूर्वक कर्तव्य मानकर दिया जा रहा हो, ऐसी पवित्र दक्षिणा ही चारों ओर के विघ्नों से दाता की रक्षा करती है।

गृहागत अतिथि का सत्कार करना भी वैदिक मर्यादा के अनुसार गृहस्थ का एक आवश्यक कर्तव्य है। अतएव नैत्यिक पंच–यज्ञों में अतिथि–यज्ञ भी परिगणित किया गया हैं जो अतिथि के घर आने पर स्वादु भोज्य, पेय आदि से सत्कृत कर उसे सुख देता है और जीवन–पर्यन्त अतिथि–यज्ञ करता रहता है, वह द्यु–लोक के समान उन्नत और प्रकाशमान हो जाता है। श्रुति कहती है कि विद्वान् व्रतनिष्ठ अतिथि जिसके घर आये, वह स्वयं उसकी सेवा में उपस्थित होकर कुशल–क्षेम एवं उसकी आवश्यकताओं के विषय में पूछे। यहाँ तक कि यदि वह अग्निहोत्र करने के लिए तैयार हो ओर उस समय अतिथि आ जाए, तो वह अग्निहोत्र छोड़कर पहले अतिथि की सेवा में पहुंचे और उसकी स्वीकृति लेकर ही अग्निहोत्र के लिए बैठे।

हे सब यज्ञों के आदर्श अग्नि–स्वरूप परमेश्वर! तुम हमें भी दक्षिणा और अतिथि–यज्ञ के लिए सदैव प्रेरित करते रहो, जिससे हम भी एक दिन द्युलोक के सदृश उच्च, उदार, विशाल, प्रकाशमान और प्रकाशक होने के गौरव को प्राप्त कर सकें।

सभार– वेदमञ्जरी

ऋषि बोध से बोध

– नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर समस्त आर्य जन ऋषि बोधोत्सव मनाते हैं। इसी दिवस बालक मूलशंकर के मन में शिवरात्रि की उस रात को जब अन्य सभी सो रहे थे तभी सही अर्थों में जागते बालक मूलशंकर ने जब चूहों को शिवलिंग पर उत्पात करते, प्रसाद खाकर मल मूत्र विसर्जन करते देखा तो उस शुभरात्रि पर बालक मूलशंकर के मन में तीव्र उत्कंठा उत्पन्न हुई कि यह शिवलिंग जो स्वयं अपनी रक्षा उत्पात कर रहे चूहों से नहीं कर पा रहा, वह सृष्टि का रचयिता, पालनकर्त्ता, संहारक शिव कैसे हो सकता है। बस बालक के मन में उठी इसी तीव्र उत्कंठा ने मूलशंकर के स्वामी दयानन्द बनने की यात्रा का शुभारंभ कर दिया और उन्होंने ईश्वर के सत्यस्वरूप को वेदों की सही व्याख्या करते हुए रखा। देव दयानन्द द्वारा दिए गए ईश्वर के सत्यस्वरूप, वैदिक मान्यताओं, आर्य सिद्धान्तों और नियमों को हम आर्य जन मानते हैं। अर्थात् ऋषि बोध से हम सभी को बोध लेना चाहिए।

अब यक्ष प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या हम सही मायनों में ऋषि बोध से बोध लेकर अब सर्वथा सरल सुलभ आर्य मान्यताओं को सीख समझ कर अपने जीवन में उतार कर सच्चे आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बन पाए। क्या हम देव दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लक्ष्य की प्राप्ति के प्रथम सोपान कृण्वन्तो स्वयमार्यम् को भी पूरा कर सके? क्या हम सही अर्थों में ऋषि बोधोत्सव को मना रहे हैं या फिर बोधोत्सव मनाने के अधिकारी हैं? अब इन प्रश्नों पर विस्तार से विचार करते हैं।

देव दयानन्द ने आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सत्यस्वरूप को हम सभी के लिए दिया था और जड़पूजा को आर्यावर्त्त के लिए घातक और लम्बी गुलामी का कारण बताया था। परन्तु हम विचार करें क्या आज भी चेतन मानव जड़ के आगे माथा नहीं पीट रहा? क्या आज भी हमारी मातायें, बहनें, बेटियाँ तथाकथित मुस्लिम कब्रों, पीरों पर अज्ञानतावश सिर नहीं पटक रहीं? यदि यह स्थिति आज भी व्यापक है तो क्या हमने ऋषि बोध से कुछ बोध लिया?

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य देव दयानन्द ने संसार का उपकार करना बताया था। क्या आज हम आर्य समाज के सेवा कार्यों को इतना व्यापक कर पाए हैं कि लोग हमारा अनुसरण करने लगें? क्या आर्य समाजों में संसार का उपकार करने वाले सेवा कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है? क्या हम दूसरों के दुःख से दुःखी होकर उसकी सहायता करने के लिए तत्पर होते हैं? यदि नहीं तो क्या हम कह सकते हैं कि हम ने अपने ऋषि के बोध से कुछ बोध लिया?

आर्य समाज की स्थापना पाखण्ड–खण्डन, सामाजिक कुरीतियों, बुराइयों, विषमताओं के विरुद्ध एक जन आन्दोलन के रूप में की गई थी। क्या आर्य समाज पाखण्ड खण्डन और सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन कर पाया? क्या आज भी समाज में डायन, भूत–प्रेत–बाधा, चमत्कार, नामदान जैसी बुराइयाँ हमारा शोषण नहीं कर रहीं? क्या आज भी तथाकथित कथावाचक हमारी अबोधता और धर्मभीरुता का लाभ उठाकर ईश्वर के स्वयंभू ठेकेदार या स्वयं को ईश्वर घोषित करके हमारा शोषण नहीं कर रहे? यदि ऐसा है तो क्या हम सही मायनों में बोधोत्सव मनाने के अधिकारी नहीं हैं।

देव दयानन्द ने जितना उपकार इस पुरुष प्रधान समाज की संकीर्ण सोच पर तीखा प्रहार करते हुए नारी जाति के उत्थान के लिए किया उसके लिए नारी जाति को सदैव उनका ऋणी बना दिया। देव दयानन्द ने बालविवाह, दहेजप्रथा, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, नारी उत्पीड़न पर चोट करते हुए नारी शिक्षा का द्वार खोला। परन्तु क्या आज नारी पर अत्याचार बन्द हो गया? क्या आज भी निर्भया जैसे सामूहिक रेपकांड या फिर हॉनर किलिंग जैसी बुराईयाँ विद्यमान नहीं हैं? क्या आज भी कोमल संवेदनशील ममतामयी माँ को उसके ही गर्भ में जन्म ले रहे उसके प्रतिरूप कन्याभ्रूण को उसके सर्वाधिक सुरक्षित स्थान पर मार देने के लिए विवश नहीं किया जाता? यदि ऐसा हो रहा है तो आर्य समाज और शेष समस्त देश ने देव दयानन्द के बताए आदर्शों पर चलकर बोध कब लिया?

देव दयानन्द ने आर्ष शिक्षा पद्धति पर बल दिया। उनके बताए मार्ग पर चलते हुए जहाँ महामानव स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की पुनः स्थापना गुरुकुल खोलते हुए की वहाँ त्यागमूर्ति श्वेतवस्त्रों में सन्यासी महात्मा हंसराज ने एक आन्दोलन के रूप में प्राचीन और नवीन को जोड़कर डी.ए.वी. के रूप में आन्दोलन प्रारम्भ किया। परन्तु हमने देश की आजादी के उपरान्त गुलामी की मानसिकता वाली मैकाले की उस शिक्षा प्रणाली को अपना लिया जो हमारे देश के भावी नागरिकों को आज भी मानसिक दासता के बन्धन में जकड़ रही है। आज भी हमारी इस शिक्षा व्यवस्था में आर्य संस्कार देकर बच्चों को एक अच्छा मनुष्य सच्चा आर्य बनाने का सर्वथा अभाव है। ऐसे में क्या हम कह सकते हैं कि हम बोधोत्सव मनाने के सच्चे अधिकारी हैं या फिर हमने ऋषि बोध से कोई बोध लिया।

एक सामान्य वाहन चालक भी अपने आगे चल रहे वाहन को गड्ढे में गिरा देखकर गड्ढे से बचने के लिए सही दिशा का चयन करके मार्ग परिवर्तन कर लेता है। परन्तु ना जाने क्यों हम आज भी दासता के बन्धन में बंधे तथाकथित विकास के नाम पर पाश्चात्य अंधानुकरण करते हुए अपने साफ दिखाई दे रहे विनाश की ओर तीव्र गति से दौड़ रहे हैं। हमें गति के रोमांच में अपना विनाश और इतिहास की तलहटी में पड़ी सभ्यताओं के नर कंकाल दिखाई नहीं दे रहे जो अट्टाहास कर रहे हैं। आओ तुम भी इतिहास की खाईयों में समा जाओ। यदि सही मायनों में ऋषि बोधोत्सव मनाना है तो आर्य सिद्धान्तों, मान्यताओं को जान मान कर स्वयं आर्य बनते हुए सबको आर्य बनाना पड़ेगा।

602, जी एच 56, सैक्टर–20
पंचकूला– 134117 (हरियाणा)

पृष्ठ 1 का शेष

वैदिक यथार्थ

घण्ट घड़ियाल से सारी मनोकामनाएं पूरी करने में लगा है। हिंदू त्याग न करना पड़े सब फोकट में मिल जाय।

ऐसे हिंदू समुदाय का रक्षक संघ इन पर गर्व करने का नारा देता। आर्य समाजी भी आज संस्थाओं में धन पद प्रतिष्ठा को ही सर्वोपरि मानता। न संध्या हवन करता और न स्वाध्याय ।

युगावतार विष्णु, शिव, ब्रह्मा, राम, कृष्ण हम जैसे शरीर धारी मानव थे न कि ईश्वर। पर अपनी उत्कृष्ट साधना और तपोबल से इन्होंने ईश्वर से तादात्म्य स्थापित कर वैदिक संस्कृति की रक्षा की। इन्हे वैदिक ग्रंथों में आर्य यानी श्रेष्ठ माना गया। संबोधन भी आर्य रूप में था। महाभारत काल के बाद जो पतन काल आया हम आर्य से हिंदू बन गए। ये शब्द किसी वैदिक वांग्मय का मूल शब्द नहीं बल्कि स्वीकृत (एडोप्टेड) रूप में है।

हम वर्तमान परिस्थितियों में हिंदुओं को एक सूत्र में पिरोना चाहते किंतु इस पर ध्यान नहीं देते कि गर्व से कहो हम हिंदुओं का आधा वोट विधर्मी वाम मार्गी दलों को जाता है। क्या संघ इन मुस्लिम परस्तो पर ईसाई परस्तों पर गर्व करेगा। ये विरोधाभास ही विघ्न का हेतु है।

हिंदू एकता के लिए गुरुकुल वैदिक शिक्षा दर्शन उपनिषद स्मृति ग्रंथों का गहन अध्ययन अनिवार्य है। आज के हिंदू पंडे पुजारी कथावाचक कर्मकांडी मठाधीश महंत केवल वेदों का नारा लगाते और अपने को सनातनी कहते। किंतु सनातन धर्म वह है जो सृष्टि रचना के अनुकूल है अपरिवर्तनीय है। इसका मूल वेद हैं जो ईश्वरीय ज्ञान है। ये ज्ञान आदि ऋषियों के द्वारा आज से 1960853124 वर्ष पूर्व ब्रह्मा नामक ऋषि से जैमिन ऋषि पर्यंत आया। इसकी व्याख्या 6 दर्शनों में हुई और इसे 11उपनिषदों के माध्यम से लोक हितार्थ और अधिक व्यवहार परक रूप दिया गया। मनुस्मृति हमारी आचार संहिता है पर ध्यान रहे वाम मार्गी विधर्मियो ने वेदों को छोड़ हर जगह प्रक्षिप्त कथानक जोड़ अर्थ का अनर्थ किया है जिसे केवल वैदिक विद्वान ही पकड़ सकते। दयानंद जी ने ही वेदों के भाष्य शुद्ध रूप में किए। ये तथ्य ही सत्य हैं जिन्हें पौराणिक पचा नहीं पता क्योंकि उसे अपने मकड़ जाल में भोले लोगों को फंसाए रखना है।

इसलिए वेदों की ओर लौटने में कल्याण है। इसके लिए केवल महर्षि दयानंद के सिद्धांत कारगर सिद्ध होंगे जिन्होंने लौटो वेदों की ओर का नारा दिया था और पूरे विश्व को आर्य बनाने की पहल की थी। तो संघ को अब हिंदुओं को आर्य बनाने का संकल्प लेना होगा तभी एक धर्म एक भाषा एक राष्ट्र एक संस्कृति और एक शासन तंत्र (स्वधर्म, स्वभाषा, स्वराष्ट्र, स्वसंस्कृति और स्वराज) का सपना साकार होगा।

केंद्रीय शासन की ओर से दयानंद जी की 200वी जयंती की पहल हुई है। जो आज के संदर्भ में अनुकरणीय हैं। समय सापेक्ष परिवर्तन आज का युग धर्म है। सभी हिंदू जन ध्यान दें।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ से सम्बद्ध / पंजीकृत समस्त आर्य समाजों एवं जिल आर्य प्रतिनिधि सभाओं को सूचित किया जाता है कि वर्ष २०२२-२३ का वार्षिक (चित संख्या ४ से ६ तक) दिनांक १० फरवरी २०२४ तक वार्षिक विवरण भरकर जमा कर दे तथा देय दशांश संस्था कोषाध्यक्ष श्री मुकेश आर्य के पास जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।

डॉ0आर.आर. चतुर्वेदी
सभा प्रधान

डॉ0 जया तिवारी
सभा मन्त्री

धर्म क्या? और धर्म की आवश्यकता क्यों?

जीवन की सफलता सत्यता में है। सत्यता का नाम धर्म है। जीवन की सफलता के लिए अत्यन्त सावधान होकर प्रत्येक कर्म करना पड़ता है, यथा – मैं क्या देखूँ, क्या न देखूँ, क्या सुनूँ, क्या न सुनूँ, क्या जानूँ, क्या न जानूँ, क्या करूँ अथवा क्या न करूँ। क्योंकि मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है, जब मनुष्य किसी भी पदार्थ को देखता है तब उसके मन में उस पदार्थ के प्रति भाव या विचार उत्पन्न होते हैं। क्योंकि यही मनुष्य होने का लक्षण है। इसीलिए निरुक्तकार यास्क ने मनुष्य का निर्वचन करते हुए लिखा है कि

'मनुष्यः कस्मात् मत्वा कर्माणि सीव्यति' – 2/7/1

अर्थात् मनुष्य तभी मनुष्य है जब वह किसी भी कर्म को चिन्तन तथा मनन पूर्वक करता है। यही मनन की प्रवृत्ति मनुष्यता की परिचायक है अन्यथा मनुष्य भी उस पशु के समान ही है जो केवल देखता है और बिना चिन्तन मनन के विषय में प्रवृत्त हो जाता है।

मनुष्य जब किसी पदार्थ को देखकर कार्य की ओर अग्रसर होता है तब चिन्तन उसको घेर लेता है, ऐसे समय में धर्म बताता है कि आपको किस दिशा में कार्य करना है, यही धर्म की आवश्यकता है। यदि धर्म जीवन में होगा तब जाकर श्रेष्ठ कर्म को कर सकेंगे अथवा पदार्थ का यथायोग्य व्यवहार (कर्म) कर सकेंगे।

काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, मद और मोह ये मानव जीवन में मनःस्थिति को दूषित करने वाले हैं। ये षड्रिपु मनुष्य की उन्नति में सर्वाधिक बाधक होते हैं इनका नाश मनुष्य धर्मरूपी अस्त्र से कर सकता है। इन विध्वंसमूलक प्रवृत्तियों को जीतना ही जितेन्द्रियता तथा शूरवीरता कहलाता है। यदि व्यक्ति के अन्दर धर्म नहीं है तो वह इनके वशीभूत होकर स्वयं अपने तथा सामाजिक पतन का कारण बन जाता है। इन पतनोन्मुखी प्रवृत्तियों को रोकने के लिए परमावश्यक होता है कि व्यक्ति विवेकशील हो और विवेकशील होने के लिए आवश्यक है अच्छे सद् चरित्रवान् मित्रों का संग करें तथा अच्छे ग्रन्थों का स्वाध्याय करें।

आज हमारी युवा पीढ़ी धर्म के अभाव में पतन की ओर अग्रसरित होती चली जा रही है, ऐसे में लोगों की चिन्तन क्षमता समाप्त हो गयी है। नित्य नये–नये मानवता के ह्रास के कृत्य दिखायी देते हैं, ऐसा क्यों है? क्या हमने कभी विचार व चिन्तन किया है?आज हमारी सोचने की क्षमता इतनी कम क्यों हो गयी है, कि हम धर्म को समझ ही नहीं पा रहे हैं। हम धर्म को एकमात्र कर्मकाण्ड का रूप स्वीकार करते हैं। आज हमें धर्म को स्वयं के अन्दर धारण करना होगा। धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध इन दश प्रमुख कर्तव्यों को स्वयं के लिए धारण करने का नाम धर्म बताया है।

धर्म की परिभाषा करने वाले विभिन्न आचार्यों के अपने–अपने मत हैं। संसार में मतवालों ने अपने–अपने धर्म के नाम पर विभिन्न चिन्ह बना लिए हैं, जैसे– कोई केश बढ़ा रहा है, कोई लम्बी दाढ़ी बढ़ाये हुए है, कोई केश व दाढ़ी दोनों ही बढ़ाये हुए है, कोई पाँच शिखाएँ रखे हुए है, कोई मूछ कटाकर दाढ़ी बढ़ा रहा है, कोई चन्दन का तिलक लगाए हुए है, कोई माथे पर अनेक रेखाओं को अंकित किये हुए है और न जाने धर्म के नाम पर क्या–क्या करते हैं। किन्तु ये सभी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं क्योंकि कहा भी है– 'न लिंग धर्मकारणं' अर्थात् धर्म का कारण कोई चिन्ह विशेष नहीं होता है।

यदि हम धर्म को जानना चाहते हैं तो हमें धर्मशास्त्र की इस पंक्ति को समझना होगा–

'धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः'

जो व्यक्ति धर्म को जानना चाहता है, उसे वेद को प्रमुखता के साथ जानना होगा। धर्म धारण करने का नाम है इसी लिए कहते हैं–

'धारणाद् धर्म इत्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः'।

जो किसी भी कार्य को करने में सत्य–असत्य का निर्णय कराये, चिन्तन व मनन कराये उसे धर्म कहते हैं। हम धर्म को धारण करते हैं तथा उसको व्यवहार रूप में प्रस्तुत करते हैं।

धर्म ज्ञान के लिए वेद ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है, क्योंकि वेद ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है और ईश्वर के सर्वज्ञ होने से उसके ज्ञान में भ्रान्ति अथवा अधूरेपन का लेशमात्र भी निशान नहीं है। वेदज्ञान सृष्टि के आदि का है तथा सभी का मूल है, अतः हम मूल को छोड़ पत्तों अथवा टहनियों को समझने में अपना समय व्यर्थ न करें।

इसीलिए धर्म का ज्ञान और उस पर आचरण मनुष्य के लिए परमावश्यक है, यह हमारी उन्नति व सुख का आधार है। मनुष्य के परम लक्ष्य पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि में परमसहायक है।

वेद मनुष्य को आदेश देता है 'मा मृत्योरुदगा वशं'। मनुष्य को प्रतिक्षण सर्तक रहकर अपने चारों ओर फैले मृत्यु के भयंकर पाशों से बचने का प्रयास करना चाहिए।

उपनिषद् का ऋषि प्रार्थना करता है–'मृत्योर्माऽमृतं गमय' हे प्रभो! मुझे इन मृत्युपाशों से बचाकर अमरता का पथिक बनाइए। इसी रहस्य को स्पष्ट करने के लिए ही धर्मशास्त्रकार घोषणा करता है– धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः। अर्थात् जो व्यक्ति धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है और जो धर्म को नष्ट करता है, धर्म उसको नष्ट कर देता है। जीवन में हताशा और किंकर्त्तव्यविमूढ़ता धार्मिक पक्ष के निर्बल होने पर ही आती है। जीवन में अधर्म की वृद्धि ही व्यक्ति को निराश तथा दुर्बल बना देती है अतः धर्म की वृद्धि करके व्यक्ति को सबल व सशक्त रहना चाहिये जिससे अधर्म के कारण क्षीणता न आ सके। धर्म से परस्पर प्रीति व सहानुभूति के भावों की वृद्धि होती है।

आचार्य चाणक्य ने लिखा है–

सुखस्य मूलं धर्मः धर्मस्य मूलमिन्द्रियजयः।

अर्थात् सुख का मूल धर्म है और धर्म का मूल–इन्द्रियों को संयम में रखना है। संसार में प्रत्येक मनुष्य की इच्छा होती है कि मैं सुखी रहूँ और सुख की प्राप्ति धर्म के बिना नहीं हो सकती। अतः धर्म का आचरण अवश्य ही करना चाहिये। बिना धर्म को अपनाये कोई भी मनुष्य सुखी नहीं हो सकता।

संसार की कोई भी वस्तु सुख का हेतु हो सकती है परन्तु मरणोत्तर किसी के साथ नहीं जा सकती। शास्त्रकार कहते हैं– 'धर्म एकोऽनुगच्छति' अर्थात् एक धर्म ही मरणोत्तर मनुष्य के साथ जाता है। संस्कृत के नीतिकार कहते हैं–

धनानि भूमौ, पशवश्च गोष्ठे, नारी गृहे बान्धवाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोकमार्गे, धर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।।

अर्थात् समस्त भौतिक धन भूमि में ही गड़ा रह जाता है अथवा आजकल बैंकों में या तिजोरियों में ही धरा रह जाता है और गाय आदि पशु गोशाला में ही बंधे रह जाते हैं। पत्नी घर के द्वार तक ही साथ जाती है और परिवार के भाई–बन्धु व मित्रजन श्मशान तक ही साथ देते हैं। एक मनुष्य का शुभाशुभ कर्म या धर्म ही परलोक में मनुष्य का साथ देता है अर्थात् धर्म के अनुसार ही मनुष्य को परलोक में अच्छी–बुरी योनियों में जाना पड़ता है।

हमे धर्म को यथार्थ में जानकर व्यवहार रूप में स्वयं के लिए धारण करने की आवश्यकता है। धर्म ही एकमात्र हमारा अस्त्र तथा शस्त्र है, जिसका प्रयोग कर हम इहलोक तथा पारलौकिक यात्रा को पूर्ण करें। आओं! हम सब मिलकर धर्म को धारण करें।

– शिवदेव आर्य
– गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

वैदिक धर्म के प्रति समर्पित आर्यसमाज

- वैदिक संस्कृति के प्रति समर्पित, महर्षि दयानंद विष के प्याले पीकर मानवता का हित चाहता है ।
- शुद्धिकरण की बलिवेदी पर कोई, स्वामी श्रद्धानंद सीने पर गोली खाता है ।
- राष्ट्रधर्म की रक्षार्थ, पंडित लेखराम चाकुओं के वारों से अपना बलिदान दे जाता है ।
- फांसी से पूर्व, बिस्मिल संध्या यज्ञ रचाता है ।
- कोई "शेखर" अपने पिस्टल की आखिरी गोली चलाकर "आजाद" रहने का अपना वचन निभाता है ।
- सावरकर तैरकर समुद्र पार कर जाता है ।
- सुखदेव फांसी के फंदे के सामने हंसी के ठहाके लगाता है ।
- आर्य समाज कभी हिन्दू विरोधी नहीं रहा, अपितु जिन कारणों से हिन्दूओं को हानि पहुंची है, मात्र उन कारणों का ही विरोधी आर्य समाज था, है और रहेगा। परन्तु आर्यसमाजी को कुछ लोग अपने धर्म व संस्कृति का विरोधी समझते हैं ।

आर्यसमाज के योद्धा सन्यासी ने शुद्धि आंदोलन चलाया, हजारों, लाखों व्यक्तियों को आर्य (हिन्दू) बनाया। इसी शुद्धि आंदोलन के कारण स्वामी श्रद्धानंद, पंडित लेखराम जी ने अपना बलिदान दिया। आर्यसमाज के सन्यासी, वानप्रस्थी, गृहस्थी, ब्रह्मचारी बलिदान हुए। ऐसे आर्यसमाज को अपना विरोधी कैसे माना जा सकता है ?

आर्य समाज के अलावा किसी ओर ने शुद्धि आंदोलन नहीं चलाया और ना ही सीने पर गोली खाई ।

एक बार आर्यसमाजी पंडित लेखराम को पता चला कि एक परिवार विधर्मी बन रहा है, चलती ट्रेन से कूदकर असंख्य घाव सहकर भी उस परिवार को विधर्मी होने से बचाया ।

हैदराबाद के निजाम के अत्याचार के विरुद्ध आर्यसमाज ने क्रान्ति का शंखनाद किया।

समाज की रक्षा के लिए आर्यसमाज आज भी संघर्ष कर रहा है, और लोग उसे विरोधी समझे क्या इससे अधिक पीड़ादायक कुछ हो सकता है ?

लोग वैर और विरोध करते रहें, परन्तु आर्यसमाज उन्हें जगाने का कार्य करता रहा है, करता है और करता ही रहेगा ।

शिक्षा क्यों, शिक्षा क्या?

– सत्य प्रकाश भारत

हम बच्चों को स्कूल भेजते हैं, हम बच्चों को पढ़ाते हैं या हम पढ़ते हैं कभी सोचा क्यों? पूछ लो किसी भी अभिभावक से, अध्यापक से या विद्यार्थी से, उत्तर आयेगा – अच्छा इंसान बनने के लिए ताकि सभी की खुशहाली के लिए, खुशहाल जीवन जी सके। भावना यह ठीक है परन्तु पूछ लो किसी से, अच्छे इंसान का मतलब क्या? कैसा आचरण, कर्म, जीवन जीने वाले को कहेंगे अच्छा इंसान? शायद उत्तर मिलना मुश्किल हो जाये।

मित्रों! हम चाहते हैं कि शिक्षा प्राप्त करके हम अच्छे इंसान बनें, खुशहाल जीवन जीयें परन्तु जब अच्छे इंसान की परिभाषा ही नहीं पता तो बनोगे कैसे? हाँ, अच्छे इंसान से मतलब, अच्छी नौकरी यानि बड़े पैकेज वाली नौकरी, उसमें से हम थोड़ा पैसा गरीब व्यक्तियों के विकास में लगा दें, बेईमानी ना करें, झूठ ना बोले, कानून का पालन करें आदि परिभाषाएँ निकल कर आती हैं। सवाल है, इससे अच्छे व्यक्ति की परिभाषा परिभाषित होती है क्या?

मान लो, एक बच्चा बचपन से पूरी मेहनत से पढ़कर अच्छे नम्बरों से पास हुआ, बड़े पैकेज वाली नौकरी भी मिल गयी, शादी भी हो गई, बाल–बच्चे भी हो गये, परिवार में मिलजुलकर रहता है, बच्चों को प्यार से रखता है, अपनी तनख्वाह में से 25 प्रतिशत गरीबों को भी देता है, तो वह अच्छा व्यक्ति है ना? सब कहेंगे ठीक। पर मै। शायद सन्तुष्ट नहीं, क्योंकि वह व्यक्ति प्रकृति व समाज से ले ज्यादा रहा है, दे बहुत कम रहा है। उसकी जीवनशैली के कारण पर्यावरण को भी खतरा हो गया है। हवा, पानी, भोजन जहरीला हो गया जिस कारण से दुनिया में तनाव, भय, भ्रष्टाचार, बीमारी व युद्ध भी बढ़े हैं क्योंकि अच्छे इंसान की परिभाषा है कि वो सबके लिए आदर्श बने, अनुकरणीय बने परन्तु आज का यह अच्छा इंसान अनुकरणीय बन ही नहीं सकता। जहाँ उसे लाख–दो–लाख से लेकर पांच लाख महीने तक की आय है, वहीं करोड़ों लोगों के पास जिन्दगी में भी 5 लाख देखने की व्यवस्था नहीं। इस प्रकार यह अच्छा व्यक्ति करोड़ों लोगों के जीवन में निराशा पैदा करता है। यह व्यक्ति लेता ही लेता है, देता बहुत कम है। विचार करो, दुनिया को देने वाला व्यक्ति बड़ा होगा या दुनिया को लूटने वाला, दुनिया को भोगने वाला?

आज का यह अच्छा आदमी, आज का यह डिग्रीधारी, पढ़ा–लिखा व्यक्ति, आज का यह विकसित आदमी, लाखों व्यक्तियों के हिस्से पर कब्जा करे बैठा है और लाखों व्यक्तियों के हिस्से के संसाधन अकेला भोग रहा है। समाज में गहरी आर्थिक विषमता का कारण बन गया है। जिसके कारण करोड़ो लोग पशु से भी बदतर भय और अभाव का जीवन जीने के लिए मजबूर हैं, तनाव व अविश्वास का जीवन जीने को मजबूर है जबकि प्रकृति में संसाधन निश्चित है, प्रकृति में व्यवस्था भी निश्चित है परन्तु जब मुट्ठीभर लोग सारे संसाधनों पर कब्जा कर लेंगे तब अव्यवस्था तो फैलेगी ही। कहीं वर्तमान की अव्यवस्था का कारण तो नहीं बन गया अच्छा आदमी?

शिक्षा क्यों? सवाल यह है। मेरी समझ कहती है कि शिक्षा की जरूरत मानव के बच्चों को ही है, पशु–पक्षी को नहीं क्योंकि पशु–पक्षी वंश अनुषंगी होता है। जैसा आचरण, जैसा कर्म उसके माता–पिता का वैसा आने वाली पीढ़ी का। परन्तु मनुष्य के साथ ऐसा नहीं। मनुष्य संस्कार अनुषंगी है। जैसे बचपन में संस्कार होंगे, जैसा उसे समझाया या सिखाया जायेगा, वैसा ही वह बनेगा। मनुष्य सोच के हिसाब से जीता है। मनुष्य के पास समझने की, सोच–विचार करने की अद्भुत क्षमता है, मनुष्य के पास सीखने की, कर्म करने की, निर्माण करने की अद्भुत् क्षमता है, बस आवश्यकता है उसकी दिशा ठीक तरफ ले जाने की और ये कार्य हैं आज के अभिभावकों का।

सही दिशा क्या है? एक बच्चा बड़ा होकर सबका सहयोगी बने, खुशहाली का कारण बने। सबका मतलब क्या? ध्यान से देखोगे तब साफ दिखेगा कि चार अवस्थाएँ है, मोटे–मोटे रूप में, अस्तित्व में। पदार्थ है, प्राण है, जीव है तथा ज्ञान है और चार व्यवस्थाएँ बनानी है मानव को। चार है, चार बनानी है। पहली चार अवस्थाएँ पदार्थ, प्राणी, जीव व ज्ञान। दूसरी चार व्यवस्थाएं बनानी है कि मैं अपने साथ, परिवार के साथ, समाज के साथ, प्रकृति के साथ जैसे जीता हूँ? पहली अवस्थाओं को समझना है। दूसरी व्यवस्थाओं को समझ के साथ बनाना है ताकि सबके साथ पूरक, सहयोगी, तालमेल के साथ जी सके, यही शिक्षा का लक्ष्य है। पदार्थ यानि हवा, पानी, धरती, खनिज, ग्रह : गोल, प्राण यानि पेड़–पौधे, जड़ी–बूटियाँ, जीव यानि पशु–पक्षी, ज्ञान यानि मानव। अर्थात् एक बच्चा बड़ा होकर पढ़–लिखकर चारों अवस्थाओं का सहयोगी, पूरक, खुशहाली का कारण बने क्योंकि वह बन सकता है, बनने की क्षमता है, मतलब पढ़–लिखकर मानव, मानव का व मानव प्रकृति का पूरक बने। मानव, मानव का पूरक, सहयोगी मतलब मानव अपने साथ, परिवार के साथ, समाज के साथ, प्रकृति (हवा, पानी, धरती) के साथ जीवना सीख जाये क्योंकि मनुष्य के पास समझने की, निर्माण की क्षमता है।

शिक्षा क्यों? स्पष्ट होता है कि शिक्षा क्या? अब सवाल उठता है, अपने परिवार, समाज, प्रकृति के साथ जीने की कला, जीने से पहले उनको समझना होगा मानव क्यों, क्या, किसलिए? परिवार क्यों, क्या किसलिए? समाज क्यों, क्या किसलिए? प्रकृति क्यों, क्या किसलिए? प्रकृति में जीव, प्राण, पदार्थ अवस्थाओं को समझना, उनके प्रयोजन को समझना, उनकी भूमिकाओं को समझना, उनके रूप, गुण, स्वभाव व धर्म को समझना, उनके साथ अपने रिश्तों एवं सम्बन्धों को समझना होगा। सम्बन्धों को समझेंगे तो सम्बन्धों में जीयेंगे ना। शिक्षा क्या? मतलब इस अस्तित्व में हर इकाई क्यों, क्या किसलिए? उनका एक–दूसरे के साथ क्या सम्बन्ध है, क्या उपयोगिता है, उसे समझना, जीना, समझाना, आने वाली पीढ़ी को। हम कुदरत की व्यवस्था को समझते नहीं, मानव के प्रयोजन एवं भूमिका को समझते नहीं, बस लग गये कार्य करने। तब दिशाविहीन तो होंगे ही ना। उसी का परिणाम है, चारों तरफ अविश्वास, द्वन्द्व, तनाव, भय, अभाव, युद्ध, आतंक व बढ़ती हत्या व आत्महत्याएं, जो ठीक नहीं हैं।

यहाँ सार यह निकल कर आया कि शिक्षा क्यों? उत्तर है, मानव की आने वाली पीढ़ी को सही समझ और सही दिशा देने के लिए ताकि वह बड़ा होकर स्वयं, परिवार, समाज और प्रकृति के साथ पूरकता और खुशहाली के साथ जी सके। भूख, भय, भ्रष्टाचार से मुक्त होकर जी सके, विश्वास, सम्मान, स्नेह, प्रेम के साथ जी सके। अब यदि पढ़–लिखकर कोई व्यक्ति ऐसा जी पा रहा है तो वह अच्छा इंसान है, वह वास्तव में सफल, खुशहाल व कामयाब और मानव कहलाने का अधिकारी व आने वाली पीढ़ी का आदर्श? अन्यथा उसके पास सूचनाएँ हैं, डिग्रियाँ हैं और मशीन के माफिक उसका जीवन है। इंसान तो नहीं बना, हाँ मशीन जरूर बन गया और भ्रमित अवस्था में है जो समाज व प्रकृति का विनाश ही करेगा, जैसा कि आज चारों ओर दिख रहा है।

शिक्षा क्या? जो है, जैसा है, जिस कारण है उसकी सही–सही समझ होना। चारों अवस्थाओं की समझ होना (पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञान)। मानव–मानव के बीच रिश्ते की समझ होना, एक–दूसरे के साथ कैसे खुशहाली पूर्वक जीना, उसकी समझ होना, मतलब मानव का मानव के साथ व्यवहार पक्ष, समझदारी का पक्ष और मानव का शेष प्रकृति के साथ कार्य, उत्पादन और कला की समझ को विकसित करना।

ये दोनों बातें होती है तब जाकर स्पष्ट होता है शिक्षा क्यों और शिक्षा क्या? दोनों बातें स्पष्ट हों, अभिभावकों को, अध्यापकों को और धीरे–धीरे बच्चों को। तब कहीं अपने मनुष्य जीवन की सार्थकता को समझेंगे, जीयेंगे और आने वाली पीढ़ी के लिए और ज्यादा खुशहाली का मार्ग बनायेंगे। तभी हम कह सकते है कि शिक्षा का मतलब 'अच्छा इन्सान बनना।'

प्रेरक प्रसंग

काम करो

सुकरात के पास एक मनुष्य आया और कहने लगा– ''आय कम है। घर में बाल–बच्चे और खाने–पीने वाले बहुत हैं। निर्वाह करना कठिन हो रहा है। कोई उपाय बताने की कृपा कीजिए, जिससे इस कष्ट से छुटकारा मिलें।''

सुकरात ने पूछा–''घर के सब लोग क्या काम करते हैं'' वह मनुष्य बोला– ''क्या वे किसी के नौकर हैं जो काम करें।'' सुकरात ने कहा–'' तब तो नौकर ही श्रेष्ठ हैं जो काम करके खाते हैं।'' वह बोला–'' मैं आपका अभिप्राय नहीं समझा।'' सुकरात ने बताया–''घर के सब मनुष्यों, बच्चों को भी कुछ न कुछ उपयोगी काम अवश्य ही करना चाहिए। उस काम से जो आय होगी वह आवश्य ही सबके व्यय के लिए पर्याप्त होगी।''

थोड़े दिन बाद वही व्यक्ति फिर आया और कहने लगा– ''आपकी कृपा से सब ठीक हो गया है। घर की स्त्रियाँ और बच्चे सीने–पिरोने, बुनने और काढ़ने आदि किसी न किसी उपयोगी काम में लगे रहते हैं। पर्याप्त आय हो जाती है। सब काम भली प्रकार चल जाते हैं। परन्तु एक उलझन पैदा हो गई है। घर के सब लोग अपने आपको तो अब खूब कमाऊ समझते हैं और मुझे निखट्टू कहते हैं।''

सुकरात ने उसे एक कहानी सुनाई और कहा– ''घर जाकर यह कहानी सबको सुना दो। बस फिर कोई उलझन शेष न रहेगी। उसने वही कहानी घर जाकर सबको सुनाई। उस दिन से सबने उस व्यक्ति को निखट्टू कहना छोड़ दिया। सुकरात की वह कहानी इस प्रकार है–

भेड़ों ने अपने स्वामी से कहा–''हम तुम्हें अन्न देती हैं, बच्चे देती हैं, दूध देती हैं। फिर भी तुम हमें कुछ नहीं देते। जंगल में चुग–फिर कर हम अपना पेट भरती हैं और तुम्हारा यह कुत्ता तुम्हें कुछ भी नहीं देता, फिर भी तुम इसे अपने भोजन में से हिस्सा देते हो। क्या यह अन्याय नहीं है?

मालिक से पूर्व ही कुत्ते ने उनको उत्तर दिया– ''नहीं, यह तो सर्वथा न्याय है। यह मैं ही हूँ तो तुम्हारी रक्षा करता हूँ नहीं तो तुम्हें भेड़िया खा जाये या चोर चुराकर ले जाये। यदि मैं तुम्हारी रक्षा के लिए सावधान न रहूँ तो चिन्ता के मारे तुम्हारा चलना–फिरना और चरना भी बन्द हो जाये।'' भेड़ें समझ गयीं। सार–परिश्रम व उद्योग वह सोने की चाबी है जो भाग्य के फाटक को खोल देती है।

अंधविश्वास का बढ़ता बोलबाला

– अशोक आर्य

कई बार हम सोचते हैं कि जड़–पूजा का जो स्वरूप व अंधविश्वास जनित जो घटनाएँ कथाएँ हम देखते–सुनते हैं वे हमारे भारत में ही हैं क्योंकि यहाँ गरीबी और अशिक्षा ज्यादा है तथा पौराणिक परम्परा में इसके आधार भी हमें प्राप्त हैं, पर यह बात सत्य नही है। विश्वभर में विस्तृत अन्य मतों में भी 'चमत्कार को नमस्कार' की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

ऐसी मान्यताओं की पृष्ठभूमि में वस्तुतः प्रमुख रूप से तीन तत्व कार्य करते हैं।

प्रथम – मानव मन सामान्य तौर पर प्रत्यक्ष पर विश्वास करता है, साकार प्रतिमा में उसे अपनी श्रद्धा व्यक्त करने हेतु प्रत्यक्ष आधार मिल जाता है। इसके साथ देखा–देखी, अधिकांश द्वारा अनुकरण व दृढ़ परम्परा का निर्मित हो जाना, उसे तात्विक चिंतन तथा विश्लेषण से दूर ले जाता है। एक मनुष्य के रूप में ही ईश्वर की कल्पना व उसके साथ तथावत् व्यवहार उसे सहज लगता है तथा ऐसी ही मानसिकता वाले करोड़ों की संख्या के मध्य सृष्टि क्रम से विरुद्ध घटनाओं को भी वह तर्क से परे मानता है।

कवि बड़े विकट और तर्काधारित सटीक प्रश्न करता है –

अजब हैरान हूँ भगवन तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

भोग लगाने पर तंज करते हुए कवि लिखता है कि जो सारे संसार को खिलाता है उसे कैसे और क्या खिलाया जा सकता है, जो सारे संसार को प्रकाशित करता है उसे दीपक दिखाने का कार्य बाल–बुद्धि ही कहा जावेगा। पर ये प्रश्न हमारी विचारतन्त्री को संभवतः झकझोरते नहीं हैं, अतः जड़–पूजा स्थलों पर एक जैसे दृश्य दिखायी पड़ते हैं यथा भगवान् को भोग लगाना, नहलाना, कपड़े पहनाना, शयन कराना, पंखे झलना, कूलर लगाना यहाँ तक कि यह मानकर कि एक ही स्थान पर बैठे–बैठे ठाकुर जी बोर हो गए होंगे, उन्हें कभी–कभी बाहर भ्रमण भी कराना आदि–आदि। इसकी विस्तार से चर्चा इस आलेख का उद्देश्य नहीं है। बात हम यह कहना चाहते हैं कि जड़–पूजा से जुड़ी यह स्थिति भारत में ही नहीं बाहर भी है। लगभग एक वर्ष पूर्व हम बैंकाक गए थे, वहाँ पटाया में एक प्रसिद्ध बौध मंदिर है, वहाँ का दृश्य भारत से बिलकुल भी अलग नहीं था। मूर्तियों पर और तो और मिनिरल वाटर तथा कोल्ड ड्रिंक का भोग लगा हुआ था। एक बौद्ध भिक्षु हाथ में एक बाँस की झाड़ू सी लेकर लोगों के सिरों पर रख–रख कर उनकी समस्याओं को दूर कर रहा था। ठीक यहाँ जैसा माहौल। भीड़ की रेलमपेल। अस्तु।

दूसरी बात जो ऐसे स्थलों से जुड़ी हुई है वह है हर स्थल के महत्त्व व महात्म्य की अपनी गाथा। आज तक हमने ऐसा एक भी इस श्रेणी का स्थल नहीं देखा जहाँ के महत्त्व की अतिवादी चर्चा न की गयी हो तथा आगन्तुकों को प्रत्यक्ष व तुरंत लाभ की गारंटी न दी जाती हो। यही वह लोभ है जो शंकालुओं को भी, शिक्षितों को भी, तार्किकों को भी लाइन में लगवा देता है।

इसी में तीसरी बात का तड़का लगाकर उपस्थिति–वृद्धि को सुनिश्चित कर दिया जाता है, वह है चमत्कार। जो भी प्रबंधन इन तीनों फैक्टर्स की जितनी अच्छी मार्केटिंग कर लेगा उतनी ही भीड़ उसके द्वारा नियंत्रित स्थलों पर आयेगी।

यह श्रद्धा मन की मुराद पूरी करने की आशा का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह दावा केवल हिन्दू धर्मस्थलों के सम्बन्ध में है ऐसा समझना भारी भूल होगी। मुस्लिम तथा ईसाई धर्मस्थल भी चमत्कार तथा मनौती पूरी करने के दावे से उत्सर्जित आक्सीजन पर श्वांस ले रहे हैं।

क्योंकि 'मेरे सारे दुःख तुरंत दूर हो जायँ', यह ऐसी कामना है जिससे कौन बचा है? हाँ, जो कार्य–कारण सिद्धांत को अटल मानता है, परमेश्वर की कर्मफल व्यवस्था में जिनका अटल विश्वास है, जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध को असंभव मानते हैं उनकी बात भिन्न है, अन्यथा तो विपत्ति के समय, जहाँ से भी जैसे भी राहत मिले वैसा करने को अच्छे से अच्छे शिक्षित और तर्कशील लोग तैयार होते देखे जाते हैं। यह चमत्कार मेरे साथ हुआ है अथवा ऐसा मैंने साक्षात् देखा है, कहने वाले उत्प्रेरक तत्व के रूप में काम करते हैं। ऐसे तथाकथित चमत्कारों की अनेकानेक कारणों से कभी पूर्ण वैज्ञानिक तथा निर्दोष पद्धति से परीक्षा न होने से भ्रम–भंजन हो नहीं पाता, यही कारण है कि हिन्दू महिलाएँ हिन्दू धर्मस्थलों पर ही नही मुस्लिम धर्मस्थलों की शरण में बहुतायत से जाती देखी जाती हैं।

ऐसे स्थलों के अस्तित्व में आने के सम्बन्ध में भी ऐसी चमत्कारिक पृष्ठभूमि बतायी जाती है कि वे श्रद्धालुओं को अधिकाधिक आकर्षित कर सकें। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के 11 वें समुल्लास में कुछ स्थलों से जुड़ी कहानियों की समीक्षा की है। यह यथार्थ समीक्षा वे इस कारण कर पाए क्योंकि उन्होंने उन स्थलों की वास्तविकता तथा चमत्कार की असलियत को अपनी आँखों से देखा था। उन्होंने ज्योतिर्लिंग, जगन्नाथ के मंदिर, ज्वालादेवी आदि के चमत्कारों का विश्लेषण सत्यार्थप्रकाश में किया है। विशेष जानकारी के लिए पाठकों को ये स्थल अवश्य पढ़ने चाहिए।

ठीक यही स्थिति हमें मुस्लिम तथा ईसाई धर्मस्थलों के सन्दर्भ में दिखाई दी। उसकी थोड़ी चर्चा यहाँ करेंगे। अजमेर की एक दरगाह के बारे में तो सभी जानते हैं। ख्वाजा साहब की दरगाह। वहाँ उर्स के अतिरिक्त भी मन्नतें माँगने वालों का तांता लगा रहता है।

एक दरगाह तारागढ़ के किले पर है। हमें पृथ्वीराज चौहान का किला देखना था। जब वहाँ पहुँचे तो एक शिष्ट नौजवान ने हमारी जिज्ञासा के उत्तर में कहा कि आपको दरगाह में होकर जाना पड़ेगा, लगे हाथ दरगाह के दर्शन भी कर लीजिये। रास्ते में वह जगह का महात्म्य तथा वहाँ के चमत्कार बताने लगा। उसके अनुसार मीराबाई की माताजी मनौती मानने वहाँ आयीं थीं और मन्नत पूरी होने पर पुनः चादर चढ़ाने आयी थीं। उसके अनुसार जिसने भी यहाँ आकर मन्नत मानी वह अवश्य पूरी हुई। वहाँ मुख्यस्थल पर बहुत सारे धागे ठीक उसी प्रकार बंधे थे जैसे हिन्दू धर्मस्थलों, पेड़ों पर बंधे रहते हैं। उसके अनुसार मन्नत माँगने वाले इन्हें बाँध कर जाते थे तथा अभिलाषा पूरी होने पर उन्हें खोलने भी आते हैं। उस नवयुवक ने यह भी बताया कि विशिष्ट दिनों में समाधि स्थल जोर–जोर से हिलता है। वहाँ घुड़सवारों की कई समाधियाँ हैं पर चमत्कार यह है कि उनकी संख्या घटती बढ़ती रहती है। बकौल उसके आप कभी भी गिन लें कभी गिनती एकसी नहीं होगी। इतना सब सुनते–सुनते एक दरवाजे के पास ले जाकर उसने बताया कि यह पृथ्वीराज के किले का बचा एकमात्र दरवाजा है जिसे सरकार ने संरक्षित घोषित किया हुआ है। देखने तो गए थे किला और देख सुनली दरगाह की कहानी। लाभ यह हुआ कि यह धारणा और पुष्ट हुई कि मत–मतान्तरों में भीड़ जुटाने तथा मान्यता वृद्धि के लिए एक ही जैसे उपाय प्राप्य हैं। तारागढ़ की दरगाह में हजरत मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार की समाधि है। जिज्ञासा हुई कि इन सूफी संत की क्या कहानी थी? उस युवक ने इन सूफी साहब की उदारता तथा सहिष्णुता की भूरि–भूरि प्रशंसा की। हमने इतिहास के कुछ पन्नों में झाँकने का प्रयास किया। आश्चर्य हुआ कि वो कोई दरवेश नहीं थे वह तो सैनिक था। वह शहाबुद्दीन गौरी का सेनानी था। जब शहाबुद्दीन ने अजयमेरु (अजमेर) पर अधिकार कर लिया तो इन मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार को वहाँ का गवर्नर नियुक्त कर दिया था। जब एक दिन मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार के अधिकांश सैनिक राजस्व वसूली करने बाहर गए थे तो मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार के साथ–साथ किले के अन्दर रह गए चन्द सिपाहियों का कत्ल राजपूतों ने कर अपनी हार का बदला लिया। एक सेनानी ने दरवेश की उपाधि कैसे प्राप्त की? जो जिन्दगी भर युद्ध करता रहा वह चमत्कार करने वाला संत कैसे बन गया? इस बारे में एक लम्बी कहानी गढ़ी गयी है। अजमेर के राजा से क्रुद्ध हो बदला लेने को तत्पर एक फकीर की सहायतार्थ गौरी के आदेश पर मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार निकाह के दौरान बीच में उठकर हिन्दुस्तान आ गए और अजमेर को फतह किया। इसी में अनेक चमत्कार जोड़ दिए गए। जैसे कि नमाज पढ़ रहे मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार पर जब एक वजनी पत्थर फैंका गया तो अंगुली के इशारे से उसे मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार ने बीच में ही रोक दिया जो आज भी उसी स्थिति में है, जिसे अधरशिला कहा जाता है।

तो चमत्कारों एवं सृष्टि विरुद्ध नियमों के कथन के बिना इन मजहबों की स्थिति नहीं है। सबसे बड़ी बात है कि कुरआन में इस बात को सिद्धांततः स्वीकार कर लिया गया है कि खुदा न सिर्फ मौजिजे और खुली निशानियाँ पैगम्बरों को देता है बल्कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी तरफ से अपनी सत्ता को सिद्ध करने हेतु चमत्कार दिखाता रहता है। यही स्थिति बायबिल की है। ज्ञान–विज्ञान विरुद्ध सैकड़ों बातें इनमें भरी पड़ीं हैं। ईसा मसीह को भी ऐसी चमत्कारिक शक्तियों का स्वामी बताया गया है , वह स्पर्श मात्र से असाध्य रोगियों को ठीक कर देते थे, अब यह शक्ति चर्च के पादरियों में भी आ गयी है। वे तो स्पर्श के बिना भी दूरस्थ रोगियों को ठीक कर देते हैं। हमने ऐसी प्रार्थना सभा स्वयं देखी है जिसमें अंधों की आँख ठीक कर दी गयीं ऐसे अंधे को मंच पर बुला कर उसकी साक्षी भी दिलवायी गयी। पर उस प्रार्थना सभा में लगातार सात दिन तक आने के बाद भी एक ऐसी विकलांग बालिका जिसे हम पूर्व से जानते थे यथास्थिति में बनी रही, उसकी स्थिति में रत्ती भर भी सुधार नहीं हुआ। पाठक असलियत क्या है समझ सकते हैं।

ऐसे सभी स्थानों पर भारी भीड़ रहती है जो स्वयं आगे के लिए मार्केटिंग का कार्य करती है। 'नकटे को ईश्वर दर्शन' की कथा की तरह प्रायः ऐसे भक्तगण अपनी मुराद पूरी होने की पुष्टि भी कर देते हैं। यहाँ कोई तर्क नहीं चलता, विज्ञान का यहाँ कोई दखल नहीं है। बस जरा पता चलना चाहिए कि कहीं खडाऊँ स्वयं चलने लग गयी हैं, कहीं हनुमान जी की प्रतिमा रोने लग गयी है, कहीं मरियम की प्रतिमा रोने लग गई है, अंधविश्वास को आस्था का नाम देकर स्वयं को सही होने का आश्वासन देने वाले लोग भारी संख्या में पहुँच जाते हैं और देखते ही देखते एक नए तीर्थ का सृजन हो जाता है।

सभी मतों में गुरुओं बाबाओं की भी यही स्थिति है। दरगाहें मुराद पूरी करती हैं तो पादरी महोदय चंगाई। एक भी ऐसा बाबा नहीं जो इन अलौकिक शक्तियों

शेष पृष्ठ ६ पर

क्या हम मांसाहारी हैं या शाकाहारी?

– नरसिंह सोनी आर्य

ईश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी बनाया है। अन्न, फल, मेवे, साग, सब्जी नाना प्रकार के ये सब मनुष्य के लिए उत्पन्न किये हैं, जानवरों/पशुओं के लिए नहीं। डिस्कवरी टी०वी० में आप देखते होंगे की, बडा जीव सिंह, चीता, भेड़िया आदि छोटे जीवों जैसे हिरण, गाय भैंस आदि जानवरों को मारकर खा जाते हैं। उदरपूर्ति करते हैं। ईश्वर ने उनको ऐसा ही बनाया है। मनुष्य के खानपान में और हिंसक पशु के खान–पान में यही एक विशेष फर्क हैं लेकिन मनुष्य के हाथ पैर व बुद्धि है वह किसी का गुलाम नहीं है। फिर वह इन्द्रियों का गुलाम क्यों हैं? क्या हम उदर पूर्ति के लिए खाते है या केवल स्वाद के लिए? मनुष्य ने किसी भी जीव को खाने से परहेज नहीं किया है। यहाँ तक की जिन्दगी भर दूध पिलाने वाली, घी मक्कखन, दही, मावा, मिठाईयां आदि खिलाने वाली गाय जिसको हमारी वैदिक सभ्यता में माता का दर्जा दिया हुआ है, काटके, मारके खा जाना, कितना घोर अनर्थ पाप करते हैं। इसका कोई प्रायश्चित नहीं होगा। अपनी जन्म देने वाली माँ को मार कर खा जाने से हजार गुना पाप लगता है। अपने अन्तरात्मा में बैठे हुए खुदा (ईश्वर) से कभी पूछ के देखों। मैं गलत कर रहा हूँ या सही, ऐसे उपयोगी पशु

जिसका गोबर, मूत्र, घी उपयोगी है। अगर आपकी आत्मा में जरा भी इंसानियत है तो यही जवाब जायेगा कि यह गलत है। ऐसे कर्म को छोड़ दो। गौ–माता, पिता और गुरू की सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं है। मांसाहार सभी मनुष्य के स्वास्थ्य का दुश्मन और रोग उत्पन्न करने वाला भी है। ऐसा सभी डॉक्टर वैद्य भी कहते है। तो फिर स्वाद के गुलाम क्यों हैं? धर्म के नाम पर देवी–देवताओं के नाम पर बली देकर मांस का प्रसाद ग्रहण करना भी पाखण्ड है। अपने को ईश्वर को धोखा देना है। इससे भी बचो। मांस भक्षण मनुष्यत्व तो नहीं है राक्षसी कृत्य हैं सुख शान्ति का घोर विरोधी है। देखिये यजुर्वेद इस बारे में क्या कहता है–

''अहन्या यत्रमान्स्य पशुन्पाहि'' यानि परमात्मा आज्ञा देता है कि हे पुरूष तू इन पशुओं को कभी मत मार और सबको सुख देने वाले पशुओं की रक्षा कर। महर्षि मनु इस बारें में क्या कहते हैं–

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खाद कश्चेति घातकाः।।

मनु अ० ५

यानि मारने की सलाह देने, मांस को काटने, पशु आदि को मारने, उनको मारने के लिए लेने और बेचने, मांस को पकाने, परोसने और खाने वाले ये सब पापकारी है।

विवेकहीन मनुष्य दुनिया का सबसे खतरनाक प्राणी है। वह किसी भी प्राणी को मारकर खाने में कोई परेज नहीं करता। हजारों टन चारा खा जाता है, हजारों लीटर पेट्रोल पी जाता है, कोयला, आदि कोई भी हाथ लगे सब खा जाता है। इसको कभी संतोष नहीं होता, तृप्ति नहीं होती। इन्द्रियों की तृप्ति में ही सारा जीवन नष्ट कर देता है। समय रहते जो चेत जाता है वही सुख को प्राप्त करता है।

पृष्ठ ५ का शेष

अंधविश्वास का बढ़ता बोलबाला

से लैस न हो। और अगर कोई है तो फिर वह धन सम्पन नहीं हो सकता।

हम न किसी की आलोचना करना चाहते हैं न किसी का दिल दुखाना। पर चिंतन मनन हेतु तर्काधारित सत्य पर विचार करने हेतु प्रेरित करना हमारा कर्तव्य है। अभी कुछ दिनों पूर्व अत्यन्त प्रसिद्ध एक गुरु के बारे में बी.बी.सी. द्वारा निर्मित एक डोक्यूमैंट्री देखने में आयी। उसमें प्रमाण सहित बाबा के चमत्कारों की तो पोल खुली ही है साथ ही उनके जीवन के अनखुले पन्ने भी सामने आये हैं जिनका अन्वेषण तत्समय में प्रभावशाली लोगों के दबाब में नहीं हो पाया। एक धारावाहिक ऐसे संत पर बनाया गया जिसमें प्रत्येक एपिसोड चमत्कारों से युक्त था।

ऐसे सभी धर्मस्थलों, गुरुओं, मजहबों से जिस दिन गढ़े गए चमत्कारों की कहानियों को, उस स्थल पर आने से या दर्शन लाभ करने से होने बाले लाभों के वर्णनों को हटा दिया जावेगा तब किस स्थल पर कितनी भीड़ होगी यह देखने वाली बात होगी।

स्थिति यह है कि विश्वभर से आये दिन ऐसे चमत्कारों की घटनाएँ सामने आती रहती हैं। यहाँ कुछ बानगी प्रस्तुत है –

२००७ की बात है। २० जनवरी शनिवार का दिन था। राजकोट (गुजरात) के एक स्थानीय हनुमान मंदिर में हनुमान जी की आँख से आँसू बहने लगे। वायु–वेग से इस चमत्कार की खबर फैल गयी। रात होते–होते भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी। जैसे तैसे पुलिस प्रशासन को बुलाया गया। प्रशासन ने भीड़ को काबू में किया। आलम ये था कि लोगों ने अपनी झोलियाँ खोल दीं। दान देने लगे।

बनारस में भी एक सज्जन श्री नन्दलाल शर्मा के घर में स्थित हनुमान मंदिर में भी मूर्ति के आँसू बहने लगे। भक्तों की भीड़ का क्या कहना? नंदलाल का कहना था कि जब उसके बेटे ने उसे आँसू वाली बात बतायी तब उसे विश्वास नहीं हुआ पर जब उसने देखा तो यह सच था। उसने मूर्ति के चेहरे को पानी से धोया फिर भी हनुमान जी के आँसू बह रहे थे।

उधर भगवान् कृष्ण की लीला स्थली भी क्यों पीछे रहे। वहाँ एक छोटे गाँव में भी हनुमान जी रोने लगे। हमें आशा है कि पाठकगण को गणेश जी का दूध पीना याद होगा ही।

जड़ वस्तु में भावनाएँ उत्पन्न होना फलस्वरूप पत्थर अथवा लकड़ी की बनी प्रतिमा का रोना सृष्टिक्रम से विरुद्ध तथा असंभव है, पर यही तो वे साधन हैं जिनसे आस्था के नाम पर भारी भीड़ को आकर्षित किया जाता है तथा उनका बौद्धिक तथा अन्य प्रकार का शोषण किया जाता है। ऐसी चमत्कारी घटनाएँ भारत अथवा हिन्दुओं के यहाँ ही नहीं होतीं, इनसे कोई भी नहीं बचा है।

जापान के अकीता में सिस्टर एग्नस कतुस्को को पवित्र मेरी स्वप्न में दिखने लगीं। 28 जून 1973 को सिस्टर एग्नस के बाएँ हाथ के अन्दर की ओर क्रास की शक्ल का घाव उभर आया और इससे काफी मात्रा में खून बहने लगा तथा सिस्टर को असह्य वेदना भी हुई। 6 जुलाई को एग्नस ने प्रार्थना करते हुए पवित्र मेरी के लकड़ी के स्टेचू से आवाज आती सुनी। उसी दिन कुछ अन्य सिस्टर्स ने स्टेचू के सीधे हाथ से खून की बूँदें टपकते देखीं। स्टेचू का यह घाव 29 सितम्बर तक रहा फिर गायब हो गया। परन्तु उसी दिन स्टेचू के माथे तथा गले से पसीना निकलने लग गया। दो वर्ष पश्चात् 4 जनवरी 75 को प्रतिमा रोने लग गयी। 6 वर्ष 8 महीने तक कुल 101 बार प्रतिमा ने रुदन किया, साथ ही यह भी हुआ कि सिस्टर एग्नस जो पूरी तरह बहरी थी, पूर्ण ठीक हो गयी। अकीता विश्वविद्यालय में प्रतिमा से निकले खून, पसीने की जाँच की बताते हैं तथा जाँच रिपोर्ट में सभी चीजों को मानवीय बताया गया, ऐसा कहा जाता है। लकड़ी की प्रतिमा से मानवीय उत्पाद? संभव नहीं। अगर रिपोर्ट सही है तो फिर एक अन्य घटना की तरह किसी की जालसाजी की इसमें पूरी–पूरी संभावना है। पर आगे चर्च कर्मचारियों के डी.एन.ए.का मिलान तथा तुलनात्मक शोध नहीं किया गया। जून 88 में पोप बेनीडिक्ट 16 ने इस चमत्कार पर अपनी मोहर लगा दी अतः अब ईसाई समुदाय इस पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता। हमने ऐसे चमत्कार के पीछे इंसानी दिमाग की बात यूँ ही नहीं कही।

रोम में फोरिल में मार्च 2006 में सांता लूसिया चर्च के कस्टोडियन ने प्रसिद्ध किया कि पवित्र मेरी की प्रतिमा रोयी और उसकी आँखों से खून निकला। इस कस्टोडियन का नाम विन्सेंजो डी कोस्तेंजो था। यह कस्टोडियन अन्य की तरह भाग्यशाली नहीं निकला पुलिस ने इसकी सघन जाँच की तथा पाया कि विन्सेंजो डी कोस्तेंजो स्वयं अपना खून इस कार्य के लिए काम में लाया था। विधि विज्ञान विशेषज्ञों ने सघन जाँच में पाया कि प्रतिमा से जो खून का नमूना लिया था उसका डी.एन.ए. तथा विन्सेंजो डी कोस्तेंजो की लार का डी.एन.ए. आपस में मिलते थे। नतीजतन विन्सेंजो डी कोस्तेंजो पर अपवित्रीकरण का मुकद्दमा चलाया गया। ऐसी सैंकड़ों सहस्रों घटनाएँ होती रहती हैं। पर निश्चित सिद्धांत यह है कि कार्य–कारण सम्बन्ध और सृष्टिक्रम के विरुद्ध कुछ भी नहीं होता। भली प्रकार वैज्ञानिक तरीके से गंभीर व स्वतन्त्र जाँच की जाय तो हर चमत्कार के पीछे इंसानी दिमाग की मौजूदगी देखी जा सकती है अथवा कुछ एक प्राकृतिक ऐसी स्थितियाँ हो सकती हैं जिनकी अभी वैज्ञानिक व्याख्या नहीं की जा सकी है, पर ऐसे चमत्कार से आपका भाग्य बदलने वाला है यह तो कम से कम भूल जायँ। तनिक चतुराई से ऐसा भ्रम पैदा किया जा सकता है।

इटली के तीन वैज्ञानिकों ने चाक, हाईड्रेटेड लोहे तथा नमक के पानी से ऐसा मिश्रण बनाया जो कि तनिक हिलाने पर लहू जैसा गीला हो जाता है पश्चात् स्थिर होने पर सूख जाता है। एक अन्य वैज्ञानिक जान फिशर ने तेल–मोम तथा रंग को मिला ऐसा मिश्रण तैयार किया जो तापमान बढ़ने के साथ पिघलकर बहने लगता है।

विश्व में अनेक जगह ऐसे अंधविश्वासों से जन–जन को वैज्ञानिक तर्कों व प्रायोगिक तरीकों के सहाय से, बचाने के प्रयास चल रहे हैं। हमारे विचार से इस बौद्धिक विनाश को रोकना आर्यसमाज का प्राथमिक कार्य होना चाहिए। पर यह कार्य आज के युग में केवल लेखनी हिला देने से संभव नहीं है। ऐसी हर घटना के तार्किक व वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु पूरा सुविधा सम्पन्न प्रकल्प तैयार किया जाकर, उस निष्कर्ष को जन–जन तक पहुँचाने का प्रबंध आज के युग की शैली से कदमताल करते हुए करने के ठोस प्रयास होने चाहिए।

– चलभाष– ०६३१४२३५१०१, ०६००१३३६८३६

महर्षि दयानन्द और सर्व–धर्म सद्भाव

– श्री विश्वनाथ शास्त्री, 2 बी0।43।7। भिलाई

भारतीय इतिहास में यह पहला अवसर था जब महर्षि दयानन्द ने अपने व्याख्यानों, शास्त्राार्थों और ग्रन्थों के द्वारा विदेशी धर्मों का खण्डन किया। भारतीय सम्प्रदाय और धर्म तो एक दूसरे का खण्डन करते ही रहते थे। श्शाक्त, श्शैव, वैष्णव सम्प्रदाय परस्पर एक दूसरे का खण्डन करते रहे हैं। आद्य शंकराचार्य ने जैनों और बौद्धों के साथ शास्त्राार्थ किया और उनके धर्मों का खण्डन करके उनको परास्त कर वैदिक धर्म की स्थापना की। उनके प्रचार और शास्त्राार्थों से बौद्ध धर्म तो भारत में समाप्तप्राय हो गया। किन्तु मतखण्डन पूर्वक स्वमत स्थापना की परम्परा तो भारत में आदि काल से चली आ रही है।

महर्षि दयानन्द ने अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में भारतीय धर्मों और विदेशी धर्मों का एक समान विधिवत् खण्डन किया है। इससे भारतीय धर्मों और विदेशी धर्मों के दुराग्रही अन्धविश्वासी लोगों में कुछ तनाव की भावना आई। इससे कुछ लोगों में यह धारणा बन गई कि महर्षि दयानन्द ने खण्डन के मार्ग पर चलकर दूसरे धर्मावलम्बियों के प्रति सद्भाव को छोड़ वैमनस्य का मार्ग अपनाया है। इससे भारत के विविध धर्मों के अनुयायियों के बीच तनाव बढ़ा है। अब हम कुछेक पंक्तियों में इस बात को स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे कि क्या महर्षि दयानन्द ने खण्डन का मार्ग अपना कर तनाव उत्पन्न किया है अथवा धर्म के इतिहास में एक नई जागृति उत्पन्न की है और प्रत्येक धर्म को वैज्ञानिक आधार पर खड़ा करने का यत्न किया है, सभी धर्मों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया है?

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश की रचना बड़े शुद्ध भाव और सत्यान्वेषण की दृष्टि से की है। वे सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखते हैं– ''यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मत में हैं वे पक्षपात छोड़कर सर्वतन्त्रा सिद्धान्त अर्थात् जो–जो बातें सबके अनुकूल सबके मत में है उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरूद्ध बातें हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़ कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इन हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है– सब मनुष्यों को दुख सागर में डुबा दिया है।'' महर्षि पुनः लिखते हैं– 'यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तारों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ या मतोन्नति वालों के साथ भी बर्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को बर्तना योग्य है।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश की उत्तरार्द्ध अनुभूमिका में एक सार्वभौम मत को प्रवर्तन करने के लिए लिखते हैं– जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विद्वज्जन ईर्ष्या–द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ने ही सबको विरोध जाल में फंसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्य मत हो जाय।

शास्त्राार्थ परम्परा और सत्यान्वेषण का समर्थन करते हुए महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश की अनुभूमिका–2 में बारहवाँ समुल्लास आरम्भ करने से पहले लिखते हैं जब तक वादी–प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद या लेख न किया जाय तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता। जब विद्वान् लोगों में सत्यासत्य का निश्चय नहीं होता तभी विद्वानों को महा अन्धकार में पड़कर बहुत दुख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्राता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है।

सत्यार्थप्रकाश के उद्धरणों से हमने यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि सत्यासत्य के निर्णय के लिए प्रीति से शास्त्राार्थ परम्परा को चलाना परम आवश्यक है और इसी दृष्टि से महर्षि ने अपने समय में प्रचलित सभी मतमतान्तरों की समीक्षा की है। अब हम महर्षि की जीवनी की ओर आते हैं और यह देखने का यत्न करते हैं कि उनका विविध धर्मों के अनुयायिओं के प्रति कैसा व्यवहार था। महर्षि संन्यासी होने के नाते **'सर्वभूतहिते रतः'** (सब प्राणियों का कल्याण करने वाले थे) वे 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' –दुष्ट के प्रति दुष्टता का व्यवहार–सिद्धान्त को मानने वाले नहीं थे। वे तो दुष्टों के प्रति भी सज्जनता का व्यवहार करते थे। वे कहा करते थे– यदि दुष्ट अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ते तो सज्जन अपनी सज्जनता को क्यों छोड़े? किसी कवि ने सज्जन का बड़ा सुन्दर लक्षण किया हैः–

ते साधवः सुजन्मानस्तैरियं भूषिता धरा।
अपकारिषु भूतेषु ये भवन्त्युपकारिणः।।

उन सज्जनों का जन्म लेना सार्थक है और ऐसे सज्जनों से धरती शोभायमान होती है– जो दुष्टों का भी उपकार करते हैं।

सच पूछिए तो महर्षि ऐसे ही सज्जन थे।

महर्षि दयानन्द ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सिद्धान्त को मानने वाले थे। वे समस्त संसार को अपना परिवार समझते थे। उनके लिए अपने–पराये नाम की कोई बात नहीं थी। वे सब धर्मों में एकता लाना चाहते थे। उन्होंने सभी धर्मों के आचार्यों को एक मंच पर लाने का यत्न किया। उनकी जीवनी का एक प्रसंग यह हैः– दिसम्बर 1876 में दिल्ली में राजदरबार हो रहा था। वहां महारानी विक्टोरिया के महोत्सव के उपलक्ष में एक बड़ी राजसभा होने वाली थी। उसके लिए सभी राजे–महाराजे और प्रतिष्ठित नागरिक राज–निमंत्राण से वहाँ एकत्रा हो रहे थे। कहा जाता है कि महाराजा इन्दौर ने ऐसे अवसर पर धर्म–प्रचार करने के लिए महर्षि को निमन्त्रिात किया था। वे राजमण्डल में भी उनका भाषण कराना चाहते थे। राजदरबार के अवसर पर महर्षि के सत्संग का लाभ उच्चकोटि के लोगों ने उठाया। महर्षि तो चाहते थे कि राजाओं, महाराजाओं की सभा करके सब आर्यों में एक धर्म और एकता का तागा पिरो दिया जाय परन्तु अनेक कारणों से इसमें सफलता नहीं मिली। भारतीय राजाओं से आशा को सफल न होते देख एक दिन महर्षि ने अपने स्थान पर भारत के भिन्न–भिन्न मतों और जातीय नेताओं की एक सभा बुलाई। उनके निमंत्राण पर पंजाब के प्रसिद्ध सुधारक कन्हैयालाल जी अलखधारी, श्रीयुत् नवीनचन्द्रराय, श्री हरिशचन्द्र चिन्तामणि, सर सैय्यद अहमद खां, श्री केशवचन्द्र सेन और श्री इन्द्रमन जी– ये छह सज्जन वहाँ पधारे। वहाँ महर्षि ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि हम भारतवासी सब परस्पर एक मत होकर एक ही रीति से देश का सुधार करें तो आशा है भारत देश सुधर जावेगा, किन्तु कई मौलिक मतभेद होने के कारण वे सब एकता के सूत्रा में सम्बद्ध न हो सके।

महर्षि दयानन्द को अपने सिद्धान्त प्यारे थे परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि वे अन्यों के सिद्धान्त की अवहेलना करते थे। वे बड़े सहनशील थे। वे पौराणिक या हिन्दू धर्म के मूर्ति–पूजा आदि सिद्धान्तों की शास्त्रीय दृष्टि से समीक्षा करते हुए भी हृदय को विशालता के कारण हिन्दू धर्म को उदार ही मानते थे। अपने जीवन के एक प्रसंग में वे 1877 के लगभग अमृतसर पहुंचे। वहां के कमिश्नर की प्रार्थना पर महर्षि उनके बंगले पर पधारे। वार्तालाप करते हुए कमिश्नर ने कहा कि– ''हिन्दू धर्म को'' 'सूत के समान कच्चा' क्यों कहते हैं?'' महर्षि ने उत्तर दिया– ''यह कच्चा नहीं किन्तु लोहे से भी कड़ा है।

हिन्दू धर्म समुद्र के समान है। इसमें अनेक अच्छे और बुरे मतों के तरंग विद्यमान हैं। इस धर्म में ऐसे भी लोग हैं जो अत्यन्त दयावान् हैं, सदाचारी हैं, परोपकार परायण रहते हैं और एक निराकार परमेश्वर को अपने मनो मन्दिर में पूजते हैं। इनके विपरीत वे लोग भी हिन्दू धर्म में पाए जाते हैं जो महाक्रूर, अनाचारी, वामी हैं; कोरे नास्तिक, अवतारों को मानने वाले हैं। यहाँ योगी, ध्यानी, तपस्वी और आजीवन ब्रह्मचारी रहने वाले भी विद्यमान हैं और ऐसे भी अनेक हैं– जिनका उद्देश्य आमोद–प्रमोद और संसार का सुख है।

हिन्दू धर्म में जहाँ छूआ–छूत मानने वाले सैकड़ों हैं वहाँ सबके साथ भोजन करने वाले हजारों हैं। परमार्थ–दर्शी और तत्वज्ञानी लोग इस धर्म में उच्च पद के पाए जाते हैं और ऐसे भी मिल जाते हैं जो ज्ञान के पीछे डण्डा लिए डोलते हैं। उत्तम मध्यम और निकृष्ट विचारों–आचारों के सभी मत और उनके मानने वाले मनुष्य इस मार्ग में मिलते हैं। वे सभी हिन्दू हैं और उन्हें कोई हिन्दूपन से निकाल नहीं सकता इसीलिए हिन्दू धर्म निर्बल नहीं किन्तु परम सबल है।''

प्रायः सभी धर्म अपने मत को सर्वश्रेष्ठ और अन्यों को दीन समझते हैं। इस प्रवृत्ति के कारण वे अपने धर्म के विरुद्ध किसी बात को सुनना नहीं चाहते। इसी प्रवृत्ति के कारण भारत में प्रचलित सभी धर्म महर्षि के खण्डन से उनके विरोधी बन गए परन्तु महर्षि ने तो खण्डन का मार्ग सत्यासत्य के निर्णय के लिए अपनाया था। वे किसी के दिल को दुखाना नहीं चाहते थे। वे सैद्धान्तिक दृष्टि से सभी धर्मों का खण्डन करते थे, किन्तु सभी धर्मों के अनुयायियों से प्रेम करते थे, विरोधियों का भी हित किया करते थे। अपने हत्यारों को भी क्षमा कर देते थे और उनके कल्याण के लिए यत्नश्शील रहते थे। महर्षि के जीवन से संबन्धित एक और घटना –लगभग 1867 में वे अनूपशहर में प्रचारार्थ पहुंचे। वहां एक ब्राह्मण ने रुष्ट होकर उन्हें पान में विष दे दिया। महर्षि ने न्यौली कर्म करके विष को अपने शरीर से निकाल दिया। सैय्यद मुहम्मद तहसीलदार, जो महर्षि के भक्त थे, ने जब यह समाचार सुना तो ब्राह्मण को कैद कर लिया। तहसीलदार का विचार था कि मेरे इस कर्म से महर्षि प्रसन्न होंगे, किन्तु जब उसने महर्षि से यह बात बताई तो महर्षि अप्रसन्न हो गये और उन्होंने कहा कि– ''मैं दुनिया को कैद कराने नहीं बल्कि उसे कैद से छुड़ाने आया हूँ। वह यदि अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता तो हम अपनी श्रेष्ठता क्यों छोड़ें?

महर्षि का ईसाइयों के प्रति कैसा सद्भाव था? ईसाइयों के गिरजाघरों के प्रति उनकी कैसी भावना थी? यह जानने के लिए एक घटना का उल्लेख करते हैं जो महर्षि के जीवन से संबन्धित हैं–1879 के लगभग महर्षि बरेली पहुंचे। वहां उनके व्याख्यान होते थे। महर्षि का पादरी स्कॉट के साथ स्नेह सम्बन्ध था। वे नहीं आये तो महर्षि ने व्याख्यान के बाद पूछा कि भक्त स्कॉट क्यों नहीं आये? पता चला कि वे रविवार को गिरजाघर जाते हैं। महर्षि ने कहा कि चलो आज भक्त स्कॉट का गिरजाघर देख आएँ। महर्षि तीन चार सौ मनुष्यों के साथ गिरिजा में पहुंचे। महर्षि को आते देख पादरी स्कॉट वेदी पर से नीचे उतरकर आए और महर्षि को उपदेश देने के लिए प्रार्थना की। महर्षि ने उनके आग्रह पर वहाँ उपदेश दिया।

महर्षि का मुसलमानों के प्रति भी बड़ा स्नेहपूर्ण व्यवहार था और अभिजात वर्ग के मुसलमान भी उनका आदर करते थे। 1873 के आसपास की बात है– महर्षि अलीगढ़ पहुंचे। वहां मुस्लिम युनिवर्सिटी अलीगढ़ के संस्थापक और प्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैय्यद अहमद खां महर्षि की सेवा में प्रायः नित्य आया करते थे। एक दिन सैय्यद साहिब कई प्रतिष्ठित मुसलमानों और अंग्रेजों सहित महर्षि की सेवा में उपस्थित हुए और अग्निहोत्रा की उपयोगिता पर वार्तालाप होता रहा। 1876 में दिल्ली में राजदरबार के अवसर पर महर्षि ने सर्वधर्म एकता का आयोजन किया। इस गोष्ठी में परस्पर सौहार्दपूर्ण वार्तालाप हुआ।

लगभग 1877 में महर्षि लाहौर पधारे। उनको लाहौर बुलाने में अधिक हाथ ब्रह्म समाजियों का था। उन्होंने महर्षि के दो व्याख्यान अपने मन्दिर में कराए। प्रथम व्याख्यान 'वेद ईश्वरीय ज्ञान' विषय पर था और दूसरा 'पुनर्जन्म' पर। ये दोनों व्याख्यान ब्रह्म समाज के मन्तव्यों के विरुद्ध थे। इसलिए ब्रह्म समाजी उनका विरोध करने लगे।

महर्षि पुराणों का भी खण्डन करते थे, इसलिए जिस उद्यान में महर्षि निवास करते थे उसके मालिक ने भी उनका विरोध किया। फलतः महर्षि के भक्त जन उन्हें डॉक्टर रहीम खां की कोठी में ले आए। यह कोठी भक्त छज्जू के चौबारे के पास थी। इस कोठी में महर्षि व्याख्यान देते और दूसरे दिन शंका समाधान करते थे। इसी कोठी में निवास करते हुए महर्षि ने आर्य समाज के संशोधित दस नियम बनाये तथा आर्य समाज लाहौर की स्थापना हुई जिसका पहला सत्संग भी यहीं हुआ। धन्य हैं महर्षि! और धन्य हैं डॉ0 रहीम खां जिन्होंने सर्वधर्म सद्भाव का एक अनूठा उदाहरण हमारे सामने रखा।

महर्षि जब जोधपुर में प्रचारार्थ पधारे थे तो वे राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमन्त्राी बरकत उल्ला खां के दादा की कोठी में निवास करते थे। श्री बरकत उल्ला खां ने सर्वधर्म सद्भाव के नाते उस कोठी को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में दान कर दिया। ऐसे ही विरले अभिजात्य सज्जनों के सौजन्य से सर्वधर्म एकता की आदर्श भावना परम्परा से चली आ रही है।

महर्षि ने सर्वधर्म सद्भाव का अभियान चलाया था और आर्य समाज इस अभियान को अब तक चलाता आ रहा है। इतना ही नहीं मुस्लिम वर्ग भी आर्य समाज के इस सौहार्दपूर्ण अभियान का आदर करते हैं। आर्य समाज स्थापना शताब्दी दिल्ली 1975 तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर 1983 के अवसर पर मुसलमानों ने शोभा यात्राओं के समय अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की थी। प्रभु इस परम्परा को दोनों ओर से बनाए रखे।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
प्रधान- ०६६५३०६३६२६, मंत्री/सम्पादक : ६६३६८७२७५०
ई-मेल : apsabhaup96@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

प्रयागराज में विश्व वेद सम्मेलन का शुभारंभ

14 जनवरी 2024 से 12 फरवरी 2024 तक विश्व वेद सम्मेलन प्रयागराज में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश वैदिक प्रवक्ता आचार्य विमल कुमार आर्य ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि युग प्रवर्तक आर्य समाज संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के द्विजन्म शताब्दी अवसर पर विश्व वेद सम्मेलन समारोह संचालक आचार्य सुचिषद् मुनि के सानिध्य में कैलाश धाम झूसी प्रयागराज में ऐतिहासिक शोभा यात्रा 12 जनवरी 2024 के साथ समारोह का शुभारंभ विश्व कल्याण हेतु 201 कुंडिये महायज्ञ के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ कैलाश धाम स्वामी कृष्णानंद गिरी एवं परशुराम आश्रम के सुदर्शन जी महाराज रथ पर सवार देशभर से आए हुए आर्यों का महाकुंभ कैलाश धाम झूसी नगर होता हुआ संगम से पवन जल 201 कलश में भरकर विश्व वेद महाप्राण यज्ञ के लिए आयोजन स्थल पर पहुंचा समारोह में श्रद्धालुओं का उत्साह देखने लायक था अपने ऋषि को आस्थाओं से सराबोर दिव्य दर्शन इस सदी का मनोहर दृश्य रहा।

इस अवसर पर आचार्य विमल कुमार आर्य ने उद्‌बोधन में बताया कि जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र महाराज ने यज्ञ में बाधा डालने वालों आसुरो संघार किया था उसी प्रकार इस चतुर्वेद प्रारयण महायज्ञ में विध्न डाल रहे असुरों से आचार्य सुचिषद् मुनि और मुदूतनारायण शुक्ल ने निजात दिलाई शोभा यात्रा में आर्यवीर दल मध्य उ०प्र०, प्रचार मंत्री अशोक कुमार तिवारी ने गीत प्रस्तुत कर जनमानस में जोश भर दिया देवीपाटन मंडल शास्त्री विनोद आर्य के नेतृत्व में आर्य वीरों की टोली इस महान पर्व की साक्षी रही प्रधान आर्य समाज बनगांव पूरे कालिका साकेत भूषण तिवारी ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डालें बलरामपुर मीडिया के भूषण शुक्ल क्रांति सुरेंद्र कुमार शुक्ल' खलीलाबाद आर्य समाज ओम प्रकाश आर्य टीम के साथ एवं उदयपुर आर्य समाज से पधारे राजकुमार गुप्त उदयपुर समाज की ओजस्वी वक्त मातृशक्ति सरला गुप्ता के उदगीत अन्य महिलाओं का ऋषि उपकारों का जोश भरा नारा तीर्थ प्रयागराज समारोह गुंजायन किया संचालक सुचिषद् मुनि ने यज्ञ स्थल की चारों ओर जौ रोपने का शुभारंभ गोण्डा सभा प्रधान शास्त्री विनोद आर्य से कराते बताया कि यहां समारोह 13 जनवरी से 12 फरवरी 2024 महर्षि के 200 वी जन्म जयंती शताब्दी समारोह 31 दिनों तक चलेगा जिसमें देश–विदेश के लाखों ऋषि भक्तों का तीर्थराज प्रयागराज समारोह में संगम होगा और ऋषि के अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प दोहराया जाएगा। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश उपमंत्री तृप्ति आर्या समारोह संचालक सुचिषद् मुनि के सपनों का संकल्प साकार प्रयागराज की पवन धरती पर ऐतिहासिक समारोह के साथ प्रारंभ हुआ है जो महर्षि के 200 जन्म तिथि 12 फरवरी 2024 तक चलेगा जिसमें देश विदेश के आर्य श्रद्धालुओं का समागम होगा।

संस्थापित–1886
श्रीमद्दयानन्दाब्द–199
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
पंजीकृत 1897
मोबाइल नं० 9653093629

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०
5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ
का
अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन
दिनांक–31 जनवरी 2024 तद्नुसार बुधवार (माघ कृष्ण पंचमी)
अधिवेशन स्थल- डॉ0 काशी प्रसाद वर्मा पैलेस, कबीरपुर, सुल्तानपुर रोड, गोसाईगंज, लखनऊ

-: अध्यक्षता :-
डॉ0 आर.आर. चतुर्वेदी
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., लखनऊ

डॉ0 आर.आर. चतुर्वेदी प्रधान
मुकेश कुमार आर्य कोषाध्यक्ष
डॉ. जया तिवारी मंत्री

स्वामी – आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–डॉ0 जया तिवारी (मंत्री) – भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में मल्टी इमेंजिंग सिस्टम, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक/मुद्रक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।